ResearchGate

See discussions, stats, and author profiles for this publication at: https://www.researchgate.net/publication/337917464

□□□□□□□□□□□□□□ □□□□□□□□□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□: □□ □□□□□□□□□□ □□□□□□□ (□□□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□□)

Article · January 2017

CITATIONS
0

READS
191

1 author:

Sangeeta Singh
Dr. C. V. Raman University
6 PUBLICATIONS **0** CITATIONS

SEE PROFILE

All content following this page was uploaded by Sangeeta Singh on 13 December 2019.

The user has requested enhancement of the downloaded file.

विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में संग्रह विकास : एक तुलनात्मक अध्ययन (बिलासपुर शहर के विशेष संदर्भ में)

सारांश – पुस्तकालय वह स्थान है जहां विविध प्रकार के ज्ञान, सूचनाओं, स्त्रोतो,सेवाओं का संग्रह रहता है पुस्तकालय शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है पुस्तक + आलय जिसमें लेखक का भाव संग्रहित हो उसे पुस्तके कहा जाता है और आलय स्थान यह घर को कहते है। इस प्रकार पुस्तकालय उस स्थान को कहते जहां जहां पर अध्ययन सामग्री जैसे पुस्तके, फिल्म, पत्र पत्रिकाएं, मानचित्र, हस्तलिखित ग्रंथ, ग्रामोफोन रिकार्ड, शोध मेटेरियल एवं अन्य पठनीय सामग्री संग्रहित रहती है और इस सामग्री की सुरक्षा की जाती है जन सूचना एवं भौक्षणिक उद्दे यो को पुरा करता है पुस्तकालय कहलाता है। प्रस्तुत अध्ययन में बिलासपुर जिले के गुरू घासीदास वि वविद्यालय में ग्रंथालय से जुड़ी प्रायः सभी सुविधाओं जैसे– पाठकों की राय, अध्ययन कक्ष की व्यवस्था, वर्गीकरण और सूची बद्ध तरीके का प्रयोग, इंटरनेट और कम्प्यूटर का प्रयोग, वांछित सामग्रीयों का संग्रह, प्रशिक्षित ग्रन्थपाल इत्यादि, को पूरा किया जा रहा है। बिलासपुर विश्वविद्यालय और पं.सुन्दर लाला शर्मा विश्वविद्यालय का कार्य प्रगति पर है।

RESEARCHERS TODAY

ISSN - 2231- 4369.

Volume 07, No 25,

Referred Research Journal

Author :

कृष्णा प्रसाद यादव

एम.फिल (पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान) डॉ. सी. वी. रामन् विश्वविद्यालय, करगीरोड–कोटा बिलासपुर (छ.ग.)

डॉ. संगीता सिंह

विभागाध्यक्ष (पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान)
डॉ. सी. वी. रामन् विश्वविद्यालय, करगीरोड–कोटा बिलासपुर (छ.ग.)

Received on 06/03/2017
Revised on 21/03/2017
Accepted on 30/03/2017

प्रस्तावना :–

ज्ञान के उपासना के लिए तीन मंदिर है एक विद्यालय दूसरा शिक्षक एवं तीसरा पुस्तकालय एक विद्यालय जहां जाकर गुरु के चरणों में ि ाक्षा ग्रहण करते है और पुस्तकालय में बैठ कर मौन रुप से शिक्षा एवं सूचना ग्रहण करते है पुस्तकालय मानव की प्रिय मित्र होती है।

Scanned by CamScanner

पुस्तकें ज्ञानार्जन, मार्गदर्शन, मानसिक जिज्ञासा, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, नैतिक, चारित्रिक, व्यावसायिक, राजनीतिक विकास, शिक्षा एवं सूचना प्राप्त करने में सहायक होती है। शिक्षण संस्थान को अपने उद्देश्यो एवं कार्यो की प्राप्ति, शिक्षण शोध एवं विकास में ग्रंथालय की अहम् भूमिका होती है। ग्रंथालय ज्ञान के उस विस्तृत क्षेत्र का प्रसार करता है, जिनकी बौध्दिक उचाईयों को श्रेश्ठा प्रदान करने की जरुरत होती है ग्रंथालय, शिक्षण का निदैशीय कार्य का पूरक होता है।

पुस्तकालयों का प्रथम और सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य है, पाठ्य सामग्रियों को प्राप्त करना, पाठ्य सामग्री के अभाव में किसी भी पुस्तकालय का अस्तित्व संभव नहीं है। यह ही नहीं, पाठ्य सामग्रियों का संरक्षण एवं समुचित व्यवस्थापन करना भी पुस्तकालयों का दायित्व है। पुस्तकालयों में जो भी प्रलेख क्रय किये जाते हैं उनका सूरूचि पूर्ण होना, ज्ञान वर्धक होना तथा सूचना प्रदायक होना आव यक है इसलिए उनकी आपूर्ति के समय इन सभी बातों पर ध्यान देना आवश्यक है तभी पुस्तकालय अपने महत्वपूर्ण सामाजिक दायित्वों को पूरा कर सकेंगे। आधुनिक पुस्तकालय विविध प्रकार की अध्ययन सामग्री, जैसे–पुस्तके, पत्र–पत्रिकाएँ, पाण्डुलिपियॉ, मानचित्र, ध्वनि, अभिलेखन सामग्री, चलचित्र, स्लाइड्स, फिल्मस्ट्रिप्स, मैग्नेटिक टेप्स, रिकार्डस, माइक्रोफिल्म आदि का चयन, अर्जन, प्रकियाकरण और इनको व्यवस्थित कर उपयोगकर्त्ताओ को उनकी आवश्यकतानुसार उन्हें उपलब्ध कराते है।

डॉ. रंगनाथन के अनुसार पुस्तकालय सामाजिक संस्था होती है, जिनमें पुस्तकों का मौलिक संग्रह होता है। पुस्तकालयों का मुख्य उदे य यह होता है कि वहां आने वाले प्रत्येंक पाठक की पाठ्य सामग्री सम्बन्धी आवश्यकता की पूर्ति की जाय तथा यहां आने वाले पाठकों को पुस्तकालय में पाठ्य सामग्री के अध्ययन की आदत डालकर पुस्तकालय का अच्छा पाठक बनाया जाये। पुस्तकालय का एक उदेश्य यह भी है कि संभावित पाठको को वास्तविक पाठकों में परिवर्तित करना। यह अवधारणा आधुनिक अवधारणा हैं। आज के पुस्तकालय एक आवश्यक सामाजिक संस्था के रूप में समाज की प्रगति के महत्वपूर्ण साधन एवं आधारशीला है। यह एक ऐसी संस्था है जहॉ ज्ञान का अर्जन एवं संरक्षण मानव उपयोग हेतु किया जाता है।

पुस्तकालय का अर्थ :– पुस्तकालय भाब्द अग्रेंजी के लाइब्रेरी भाब्द का हिन्दी रुपांतरण है। लाइब्रेरी भाब्द की उत्पत्ति लेटिन शब्द "लाइवर" से हुआ है जिसका अर्थ है पुस्तक, पुस्तकालय का इतिहास लेखन प्रणाली, पुस्तकों और दस्तावेज के स्वरुप को संरक्षित रखने की पद्धतियो और प्रणालियों से जुडा है।

Scanned by CamScanner

सूचना :– सूचना एक कांसेप्ट है इनके विविध अर्थ होते है जैसे संचार, नियंत्रण, आंकडा ,आदेश, अर्थ, पैर्टन, आदि। आज मानव को हर क्षेत्र में सूचना की आव यकता होती है ज्ञान, जिज्ञासा, शोध, शिक्षा, तकनीकि, चिकित्सा के लिए यह आवश्यक है

पुस्तकालय की परिभाषा :–

डॉ. रगनाथन के अनुसार :– "पुस्तकालय एक जन संस्था है जिनको पुस्तको की सुरक्षा और संग्रहण का कार्य सौपा गया है, उसका कर्तव्य उनको, उन व्यक्तियों के लिए सुलभ कराना है जो उनका उपयोग करना चाहते है और उनका कार्य अपने पड़ोस में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति को पुस्तकालय आने के लिए अभ्यस्त और पुस्तको के अध्येता के रुप में परिवर्तित करना है"

शैक्षणिक पुस्तकालय :–

शिक्षण संस्थाओं के पुस्तकालयों को इस प्रकार विभाजित किया जा सकता है, जैसे विश्वविद्यालय पुस्तकालय, विद्यालय पुस्तकालय, माध्यमिक शाला पुस्तकालय, बेसिक शाला पुस्तकालय एवं प्रयोगशालाओं, अनुसंधान संस्थाओं और खोज संस्थाओं के निजी पुस्तकालय आदि। हर विश्वविद्यालय के साथ एक विशाल पुस्तकालय का होना प्रायः अनिवार्य ही है। बेसिक शालाओं एवं जूनियर हाई स्कूलों में तो अभी पुस्तकालयों का विकास नहीं हुआ है, परंतु माध्यमिक शालाओं एवं विद्यालयों के पुस्तकालयों का सर्वांगीण विकास हो रहा है।

शैक्षणिक पुस्तकालय विद्यार्थियों तथा शिक्षकों को सेवा प्रदान करती है। तथा इसके साथ ही साथ विद्यालयों के उदेश्य प्राप्ति में भी सहायता करती है। इसके मुख्य कार्य भी पेतृक संस्थान को लक्ष्य प्राप्ती में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करना हैं। यहां के उपयोगकर्ता जो शिक्षक तथा विद्यार्थी होते है को उनके अध्ययन–अध्यापन सम्बन्धी कार्यो को पूरा करने में सहायता प्रदान करना है। शैक्षणिक पुस्तकालयों में सबसे अधिक महत्वपूर्ण स्थिति विद्यालय पुस्तकालय की होती है, क्योंकि इसी स्तर में विद्यार्थियों में पढ़ने की प्रवृति जगायी जा सकती है। विद्यालय पुस्तकालय ही छात्र के जीवन में अध्ययन के प्रति रूचि जाग्रत करती है। एक बार यह रूचि जागृत हो जाती है तो फिर जीवन भर बनी रहती है।

विस्तृत अर्थों में संगठन का आशय किसी कार्य के लिए आवश्यक साधनों के परस्पर संबंध से है। पुस्तकालय संगठन में भवन, कर्मचारी, वित्त, सामग्री, आदि तत्व निहित रहते हैं। इसमें से किसी एक तत्व का एकाकी अस्तित्व कोई महत्व नहीं रखता, किन्तु जब यह सब परस्पर मिलकर समन्वित होते हैं, तो बहुत महत्वपूर्ण हो जाते हैं।

Scanned by CamScanner

शैक्षणिक पुस्तकालय के विभिन्न प्रकार :–

20वीं शताब्दी में कई प्रकार के पुस्तकालयों का उदय हुआ लेकिन जैसा पुस्तकालयों का विकास द्वितीय महा युद्ध के बाद हुआ है ऐसा पिछली दो या तीन शताब्दियों में नही हुआ। आज समाज के हर वर्ग के लिए पुस्तकालय स्थापित हो रहे है। इस प्रकार के पुस्तकालयों के संगठन एवं तकनीकी विविधताएं है। ऐसे पुस्तकालयों के संगठन, संचालन विधि, नई तकनीकों का उपयोग, पुस्तकालय संग्रह तथा कर्मचारियों में पाई जाने वाली विविधता का अध्ययन करना पाठकों के लिए आव यक है। आधुनिक समाज में निम्नलिखित प्रकार के प्रमुख पुस्तकालय होते है –

शैक्षणिक पुस्तकालय के अंतर्गत –

विद्यालय पुस्तकालय– इसमें प्राथमिक, माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक विद्यालय से संबद्ध पुस्तकालय आने है। शैक्षणिक पुस्तकालयों में विद्यार्थी के प्रारम्भिक शैक्षणिक जीवन में अध्ययन के प्रति रूचि जागृत करने वाले स्त्रोत विद्यालय पुस्तकालय ही हैं। जीवन के आरम्भ में जाग्रत रूचि सामान्यतया कभी सुप्त नहीं होती है। विद्यालय पुस्तकालय से प्राप्त होने वाली सेवाओं के कारण अध्यापक एवं छात्र दोनों ही अपना बहुमूल्य अतिरिक्त समय रचनात्मक एवं सृजनात्मक कार्यों में लगा सकते हैं या लगाने में समर्थ होते हैं।

महाविद्यालय पुस्तकालय – यह पुस्तकालय महाविद्यालय की समस्त गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र होता है। महाविद्यालय पुस्तकालय के कार्य–संदर्भ सेवा द्वारा शैक्षणिक कार्यों में सहायता प्रदान करना, उनके मानसिक विकास में योगदान देना तथा शैक्षणिक स्तर को उन्नत करने के उद्देश्य से विभागीय सदस्यों में पुस्तकालय सेवा उपलब्ध कराना एवं छात्रों को उपयोगी तथा अधिक से अधिक पुस्तकें पढ़ने के लिए प्रेरित करना है जिससे उनमें साहित्य के अध्ययन तथा शोध के प्रति इस प्रकार रूचि जागृत हो जो जीवन पर्यन्त बनी रहे।

विश्वविद्यालय पुस्तकालय – इसमें सामान्य रूप से विश्वविद्यालय से संबद्ध पुस्तकालय रखे जाते हैं। उच्च शिक्षा के विकास के साथ–साथ शिक्षा के गुणवत्ता में भी वृद्धि हुई है। इन सब का अंति लक्ष्य यही है कि सामाजिक एवं आर्थिक प्रगति तीव्र गति से हो। पुस्तकालय का मुख्य उद्देश्य अपने पाठकों को पुस्तके तथा अन्य पाठ्य सामग्री जो उनके अध्ययन एवं शोध कार्य के लिए आवश्यक है उपलब्ध करवाना है, अच्छी पुस्तके चयनित कर उनको वर्गीकरण तथा सूचिकरण द्वारा पाठको के लिए व्यवस्थित करते है जिससे पाठकों को पुस्तकों के बारे में पूर्ण जानकारी मिल सके।

Scanned by CamScanner

संग्रह विकास का अर्थ एवं परिभाषा :–

पुस्तकालय में संग्रह विकास पुस्तकालयों द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवा की गुणवत्ता मुख्य रूप से पुस्तकालय में उपलब्ध पाठ्य–सामग्री के संग्रह पर निर्भर करती है। आधुनिक युग में प्रलेखों का उत्पादन काफी तीव्र गति से हो रहा है, जिसके फलस्वरूप बड़ी मात्रा में ग्रन्थ, पत्र–पत्रिकाओं, सरकारी प्रका ान, पम्पलेट्स एवं गैर–मुद्रित सामग्री का उत्पादन किया जा रहा है।

हैरोड लाइब्रेरियन्स ग्लोसरी के अनुसार, "संस्था के उद्देश्यों को ध्यान में रख कर न केवल वर्तमान को ध्यान में रखकर बल्कि भविष्य को ध्यान में रखकर पाठ्य–सामग्री की संग्रह योजना करना ही संग्रह विकास कहलाती है।"

संग्रह विकास के उद्देश्य :–आधुनिक पुस्तकालयों की आवश्यकतायें दिन प्रतिदिन बदलती जा रही हैं, अतः इस बदलते परिवेश में संग्रह विकास के प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार स्पश्ट किये जा सकते हैं–

(1) पुस्तकालयों द्वारा अपने पाठकों को उत्तम सेवायें प्रदान करना।

(2) पाठकों की बदलती हुयी रूचि के अनुसार प्रलेख उपलब्ध कराना एवं नवीनतम सूचनाओं की जानकारी प्रदान करना।

(3) शोध कार्यों को प्रोत्साहन एवं सहायता प्रदान करना।

(4) पुस्तकालय द्वारा लक्षित उद्दे यों को दृश्टिगत रखते हुये संग्रह विकास का कार्य करना।

(5) पाठकों के लिये आवश्यक एवं उपयोगी ग्रन्थों का चयन करना एवं उन्हें प्राप्त करना।

(6) पुस्तकालय का समय–समय पर पुनरावलोकन कर संग्रह सं ोधन करना।

संग्रह विकास नीति :– पुस्तकालयों में संग्रह के विकास करने के लिये एक सुनियोजित नीति का निर्माण किया जाता है। यह नीति कार्य–प्रणाली का प्रारूप होती है जोकि पुस्तकालयों में संग्रह विकास के लिये अपनाई जाती है। संग्रह विकास की इस नीति के दो रूप हो सकते हैं 1. लिखित नीति 2. अलिखित नीति

संग्रह विकास नीति के लाभ/महत्व :–पुस्तकालयों में संग्रह विकास नीति के विभिन्न लाभ हैं, जोकि निम्नलिखित हैं –

(1) पुस्तकालय में वित्त–व्यवस्था सीमित होती है, अतः धन का व्यय उचित एवं व्यवस्थित प्रकार से किये जाने के लिये संग्रह विकास नीति अत्यधिक लाभप्रद है।

Scanned by CamScanner

(2) पुस्तकालय के उद्देश्यों एवं पाठकों की आवश्यकता पूर्ति करने में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करती है।

(3) पुस्तकालय संग्रह विकास नीति संग्रह विकास के लिये आधार निर्मित करती है।

(4) पुस्तकालय सामग्री के अधिग्रहण हेतु उत्तम नीति के चुनाव में सहायता प्रदान करती है।

(5) अन्तर–पुस्तकालयीन आदान (ILL) सेवा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह करती हैं।

(6) संग्रह विकास नीति अपनाये जाने से सभी विशयों का संग्रह समान रूप से किया जाता है।

अध्ययन का उद्देश्य –

किसी भी कार्य को करने के लिए उसे पूर्व उद्देश्य निर्धारित करना आवश्यक होता है, क्योंकि पूर्व निर्धारित उद्देश्य अनुसंधान कार्य को भटकने से बचाते हैं। प्रत्येक अनुसंधान के पीछे कोई न कोई उद्देश्य अवश्य होता है। अनुसंधान का महत्वपूर्ण उद्देश्य यह होता है कि इसके द्वारा पुराने तथ्यों की जांच और नवीन तथ्यों की खोज तथा अपनी व्यवस्थित ज्ञान की प्रगति करना है। प्रत्येक रचना के मूल में कोई न कोई प्रयोजन निहित होता है। अतः अनुसंधान कार्य में प्रवृत्त होते समय अनुसंधानकर्ता के मन में भी निश्चित रूप से कुछ लक्ष्य विद्यमान रहते हैं। ज्यों–ज्यों शोधकार्य आगे बढ़ता जाता है त्यों–त्यों अनुसंधानकर्ता को अधिक उत्साह प्राप्त होता जाता है, उसके विचारों में प्रौढ़ता आती जाती है और संभवतः इससे उसे मानसिक संतोष का अनुभव होता है। अनुसंधान का उद्देश्य केवल सैद्धांतिक उद्देश्य ही नहीं होता बल्कि व्यवहारिक उद्देश्य भी होता है। संबंधित लघुशोध का उद्देश्य वि वविद्यालयीन पुस्तकालयों में दी जाने वाली पुस्तकालय सेवा का अवलोकन करना जो निम्न प्रकार है:–

- बिलासपुर शहर के विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में ई–संसाधन, पुस्तकें, पत्रिकायें, माइक्रोफिल्म और शोधकर्ताओं का अध्ययन करना।
- बिलासपुर शहर के विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में प्राथमिक, माध्यमिक और तृतीयक स्त्रोतों का अध्ययन करना।
- बिलासपुर शहर के विश्वविद्यालयों में संग्रह विकास का अध्ययन करना।
- बिलासपुर शहर के विश्वविद्यालयों में पुस्तकों एवं ई–संसाधन के रखरखाव की स्थिति का अध्ययन करना।

Scanned by CamScanner

- बिलासपुर शहर के विश्वविद्यालय में स्वचालन एवं कम्प्यूटर पर आधारित सूचना संग्रह एवं उनकी सेवाओं का अध्ययन।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ –

किसी भी कार्य को करने के लिए उसे पूर्व उद्देश्य निर्धारित करना आवश्यक होता है, उद्देश्य को पूर्ण करने के लिए परिकल्पनाओं की आवश्यकता होती है। जिससे अनुसंधान कार्य पूर्ण करने में सहयोग प्रदान होता है। शोधकर्ता द्वारा शोधार्थी ने अपने समस्याओं का निश्कर्श निकालने हेतु निम्नलिखित परिकल्पनाओं को दिया गया है–

- बिलासपुर शहर के विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में ई–संसाधन, पुस्तकें, पत्रिकायें, माइक्रोफिल्म संग्रहित है।
- बिलासपुर शहर के विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में प्राथमिक, माध्यमिक और तृतीयक स्त्रोत संग्रहित है।
- बिलासपुर शहर के विश्वविद्यालयों में संग्रह विकास हो रहा है।
- बिलासपुर शहर के विश्वविद्यालयों में पुस्तकों एवं ई–संसाधन के रखरखाव की स्थिति में सुधार है।
- बिलासपुर शहर के विश्वविद्यालय में स्वचालन एवं कम्प्यूटर पर आधारित सूचना संग्रह एवं उनकी सेवाओं से पाठक संतष्ट है।

शोध का परिसीमन :–

- प्रस्तुत शोध अध्ययन में पुस्तकालयों में पुस्तकों को संग्रह करने के लिए विभिन्न विश्वविद्यालय स्तर में किया जा रहा है।
- प्रस्तुत शोध में बिलासपुर शहर के तीन वि वविद्यालय गुरूघासीदास केन्दीय विश्वविद्यालय, बिलासपुर विश्वविद्यालय एवं पं. सुन्दर लाल शर्मा मुक्त विश्वविद्यालय को अध्ययन के लिए लिया गया है।
- बिलासपुर शहर के विश्वविद्यालय में केवल संग्रह विकास के क्षेत्र पर ही अध्ययन सीमित है।

छत्तीसगढ़ का परिचय :–

'धान का कटोरा' कहा जाने वाला छत्तीसगढ अंचल मध्यप्रदश पुनर्गठन अधिनियम 2000 के द्वारा भारत के हृदय प्रदेश, मध्यप्रदेश से पृथक होकर 1 नवम्बर 2000 के भारतीय संघ का

Scanned by CamScanner

26 वां राज्य बन गया। छत्तीसगढ़ राज्य का गठन एकीकृत मध्यप्रदेश के 16 जिले को पृथक कर किया गया था! छत्तीसगढ़ राज्य मध्यप्रदेश के दक्षिण–पूर्व में $17^0$46 उत्तरी अक्षांश तथा $80^0$15 पूर्वी देशान्तर से $84^0$20 पूर्वी देशान्तर रेखाओं के मध्य स्थित है। इसका कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 1,35,194 वर्ग कि.मी. है। इसकी उत्तरी–दक्षिणी लम्बाई 360 कि.मी. तथा पूर्वी–पश्चिमी चौड़ाई 140 कि.मी. है। छत्तीसगढ़ के उत्तर में उत्तर प्रदेश, उत्तरी–पूर्वी सीमा में झारखण्ड, दक्षिणी पूर्वी में उड़ीसा राज्य स्थित है। दक्षिण में आंध्रप्रदश, दक्षिण–पश्चिम में महाराश्ट्र तथा उत्तरी पश्चिमी भाग में मध्यप्रदेश स्थित है। इस राज्य में 5 संभाग व 27 जिले हैं। क्षेत्रफल की दृश्टि से छत्तीसगढ़ का क्षेत्रफल 16 राज्यों से अधिक है।

बिलासपुर जिले का संक्षिप्त परिचय :–

बिलासपुर जिला छत्तीसगढ़ राज्य का हृदय स्थल के नाम से जाना जाता है। इसका मुख्यालय बिलासपुर है जो राज्य की राजधानी नया रायपुर से 133 किलोमीटर उत्तर में स्थित है तथा प्रशासनिक दृष्टि से राज्य का दूसरा सबसे प्रमुख शहर है। छत्तीसगढ़ राज्य का उच्च न्यायालय भी इसी शहर में स्थित है अतः इसे "न्यायधानी" होने का भी गौरव प्राप्त है। बिलासपुर 22.23 अंश उत्तर तथा 82.08 अंश में स्थित है। समुद्री तल से इसकी औसत ऊंचाई 264 मीटर (866 फीट) है। वर्षाधारित अरपा नदी इस जिले की जीवनरेखा मानी जाती है, जिसका उद्गम मध्य भारत के मैकल पर्वत श्रेणियों से होता है। बिलासपुर के उत्तर में कोरिया तथा शहडोल जिला, पश्चिम में मुंगेली, दक्षिण में बलोदाबजार –भाटापारा तथा पूर्व में कोरबा एवं जांजगीर–चाम्पा जिले स्थित है।

बिलासपुर भाहर का विश्वविद्यालय

गुरूघासीदास केन्द्रीय वि वविद्यालय :–गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, भारत का एक केन्द्रीय विश्वविद्यालय बिलासपुर के छत्तीसगढ़ राज्य में केंद्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम 2009, के 25 नं. के तहत स्थापित स्थित है। औपचारिक रूप से गुरु घासीदास विश्वविद्यालय(GGU), राज्य विधानसभा के अधिनियम द्वारा स्थापित किया गया था, औपचारिक रूप से 16 जून, 1983 को उद्घाटन किया गया। भारतीय विश्वविद्यालयों के संघ और राष्ट्रमंडल विश्वविद्यालय संघ का एक सक्रिय सदस्य है। सामाजिक और आर्थिक रूप से चुनौती वाले क्षेत्र में स्थित विश्वविद्यालय को उचित नाम, महान संत गुरुघासीदास (जन्म 17 वीं सदी में) के सम्मान स्वरूप दिया गया। जिन्होने दलितों, सभी सामाजिक बुराइयों और समाज में प्रचलित अन्याय के खिलाफ एक अनवरत संघर्ष छेड़ा। विश्वविद्यालय एक आवासीय सह सम्बद्ध संस्था है, इसका अधिकार क्षेत्र

Scanned by CamScanner

छत्तीसगढ़ राज्य के बिलासपुर राजस्व डिवीजन में फैल रहा है। ग्रंथालय का अर्थ प्रवाहपूर्ण ज्ञान एवं सूचनाओं को उपयोक्ता को उपलब्ध कराना है। गुरू घासीदास वि वविद्यालय के केन्द्रीय पुस्तकालय अपने स्तर के सभी भौक्षणिक आव यकताओं को पूरा करता है। यहॉ के केन्द्रीय ग्रंथालय के लिए एक विस्तृत भवन के साथ–साथ 500 सीट वाला एक रिफ्रेन्स हाल है जो प्रत्येक समय सेवा प्रदान करता है। यह के केन्द्रीय पुस्तकालय में 1,42,408 पुस्तकें एवं 1433 पी.एच.डी. भोध प्रबंध है इसके अतिरिक्त यह राश्ट्रीय एवं अंतर्राश्ट्रीय स्तर के जॉनर्ल एवं मैंगजीन्स इ ू किया जाता है। केन्द्रीय ग्रंथालय में (`वनस) 2.0 नामक सॉफ्टवेयर का उपयोग हो रहा जो कि ग्रंथालय आटोमेशन के लिए आव यक है।

पंडित सुंदरलाल शर्मा (ओपन) वि वविद्यालय का परिचयः– पंडित सुंदरलाल शर्मा (ओपन) वि वविद्यालय (पीएसएसओयू) छत्तीसगढ़, भारत के गणराज्य के 55वें वर्श में छत्तीसगढ़ विधानसभा द्वारा बिलासपुर की स्थापना की गई थी। राज्य के राज्यपाल ने 20 जनवरी 2005 को अपनी सहमति दी। और यह अधिनियम छत्तीसगढ़ गजट (अतिरिक्त सामान्य) नंबर पर प्रकाशित हुआ। डॉ. टी.डी. शर्मा 2 मार्च 2005 को पहली बार उप–कुलपति के रूप में इस विश्वविद्यालय में भागिल हुए जबकि डॉ. शरद कुमार वाजपेयी ने 15 मार्च 2005 को रजिस्ट्रार के रूप में पदभार ग्रहण किया। इसलिए ओपन विश्वविद्यालय के आवश्यकता महसूस हुई। जो वर्तमान में छात्रों एवं कर्मचारियों को अपनी शिक्षा को लगातार बनाये रखने में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। इस प्रकार उनके बौद्धिक स्तर पर विचार करने वाले श्री आडवाणीजी ने वर्तमान युग में ओपन यूनिवर्सिटी सिस्टम के महत्व को रेखांकित किया।

बिलासपुर विश्वविद्यालय का परिचय : बिलासपुर वि वविद्यालय राज्य विश्वविद्यालय है जो छत्तीसगढ़ अधिनियम–07, 2012 छत्तीसगढ़ विश्वविद्यालय (संशोधन) अधिनियम–2011 के 03.02.2012 को गजट अधिसूचना द्वारा स्थापित किया गया था और जून 2012 में इसकी मौजूदगी में आया था। विश्वविद्यालय पुराने उच्च न्यायालय भवन गांधी चौक के पास बिलासपुर भाहर में स्थित है। लगभग 168 सरकारी हैं और छत्तीसगढ़ राज्य के 05 जिलों से संबद्ध निजी महाविद्यालय जो एक साथ बिलासपुर विश्वविद्यालय के अधिकार क्षेत्र का गठन करते हैं। महाविद्यालय, विज्ञान, कला, वाणिज्य, कानून और शिक्षा और अनुसंधान के केंद्रों में विभिन्न धाराओं में स्नातक और स्नात्कोत्तर अध्ययन करते हैं। विभिन्न प्रकार की गतिविधियों से शिक्षा के माध्यम से शिक्षकों उत्कृष्टता की ओर बढ़ाता है। छत्तीसगढ़ राज्य के विकास के लिए मानव संसाधन व्यक्तियों को शिक्षित और प्रशिक्षित करना। क्षेत्र के सामाजिक–आर्थिक विकास के

Scanned by CamScanner

लिए बौद्धिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक और प्राकृतिक संसाधन विकास का उन्नयन। संबद्ध महाविद्यालयों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए उपयुक्त उपाय।

निष्कर्ष :–

इस शोध का मुख्य उद्देश्य विश्वविद्यालय में पुस्तकालय एवं सूचना सेवाओं की स्थिति को जानने के उद्देश्य से किया गया है। तथा इससे विश्वविद्यालय के संग्रह विकास पर क्या प्रभाव पड़ रहा हैं। क्योंकि वर्तमान सदी में पुस्तकालयों में कम्प्यूटर, दूरसंचार तंत्र एवं इलेक्ट्रानिक मीडिया का प्रयोग, सूचना को प्राप्त करने, संग्रह करने, संसाधित करने, पुर्नप्राप्ति तथा संप्रेषण करने के लिए किया जाता है। इस अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष निम्नवत हैं:–

गुरू घासीदास विश्वविद्यालय के ग्रंथालय के लिए 4 करोड़ शासकीय अनुदान से प्राप्त होता है। अन्य स्त्रोत से तथा शुल्क व जुर्माना आदि से किसी भी प्रकार की राशि नहीं मिलती है। पं. सुंदरलाल भार्मा मुक्त वि ववविद्यालय के ग्रंथालय के लिए किसी भी प्रकार की भासकीय बजट नहीं दिया जाता है। इस वि ववविद्यालय में अन्य स्त्रोत से प्राप्त अनुदान के माध्यम से मिलता है। तथा इस विश्वविद्यालय में भुल्क व जुर्माना से किसी भी प्रकार की रा ि प्राप्त नहीं होती है। वरन् दान दाताओं द्वारा पुस्तकें उपहार स्वरूप गंथालय को प्रदान की जाती है। बिलासपुर वि ववविद्यालय के ग्रंथालय के लिए किसी भी प्रकार की भासकीय अनुदान नहीं मिलता है और ना ही शुल्क का कोई प्रावधान है, और ना ही किसी अन्य स्त्रोंत से अनुदान प्राप्त होता है।

गुरू घासीदास विश्वविद्यालय के ग्रंथालय में कुल अलमारियों की संख्या 27 है, कार्यालयिन टेबल कुर्सियों की संख्या 69 है, अध्ययन टेबल कुर्सियों की संख्या 385 है। पं. सुंदरलाल शर्मा मुक्त विश्वविद्यालय के ग्रंथालय में कुल अलमारियों की संख्या 3 है, कार्यलयिन टेबल कुर्सियों की संख्या 8 है, अध्ययन टेबल कुर्सियों की संख्या 2 है। बिलासपुर वि ववविद्यालय के ग्रंथालय में कुल अलमारियों की संख्या 4 है, कार्यालयिन टेबल कुर्सियों की संख्या 12 है, अध्ययन टेबल कुर्सियों की संख्या 2 है।

गुरू घासीदास वि ववविद्यालय के ग्रंथालय में कम्प्यूटरों की संख्या 125 है, प्रिंटर की संख्या 05 है, फोटोकॉपी मशीन की संख्या 1 है। पं. सुंदरलाल शर्मा मुक्त वि ववविद्यालय के ग्रंथालय में कम्प्यूटरों की संख्या 05 है, प्रिंटर की संख्या 0 है, फोटोकॉपी मशीन की संख्या 0 है। बिलासपुर वि ववविद्यालय के ग्रंथालय में कम्प्यूटरों की संख्या 0 है, प्रिंटर की संख्या 0 है, फोटोकॉपी मशीन की संख्या 0 है।

Scanned by CamScanner

गुरू घासीदास वि ववि्यालय के ग्रंथालय में अध्ययन कक्ष की सुविधा है, रिप्रोग्राफी की सुविधा नहीं है, माईक्रोफिल्मस की सुविधा नहीं है तथा इंटरनेट की सुविधा उपलब्ध है। पं. सुंदरलाल भार्मा मुक्त वि ववि्यालय के ग्रंथालय में अध्ययन कक्ष की सुविधा है, रिप्रोग्राफी की सुविधा नहीं है, माईक्रोफिल्मस की सुविधा नहीं है तथा इंटरनेट की सुविधा उपलब्ध है। बिलासपुर विश्वविद्यालय के ग्रंथालय में अध्ययन कक्ष की सुविधा है, रिप्रोग्राफी की सुविधा नहीं है, माईक्रोफिल्मस की सुविधा नहीं है तथा इंटरनेट की सुविधा उपलब्ध नहीं है।

गुरू घासीदास वि ववि्यालय के ग्रंथालय में द्वि–बिन्दु वर्गीकरण, सार्वभौमिक द मलव वर्गीकरण एवं अन्य विधि का प्रयोग नहीं किया जाता लेकिन दशमलव वर्गीकरण विधि का प्रयोग किया जाता है। पं. सुंदरलाल शर्मा मुक्त विश्वविद्यालय के ग्रंथालय में द्वि–बिन्दु वर्गीकरण, दशमलव वर्गीकरण, सार्वभौमिक दशमलव वर्गीकरण एवं अन्य विधि का प्रयोग नहीं किया जाता है। बिलासपुर विश्वविद्यालय के ग्रंथालय में द्वि–बिन्दु वर्गीकरण, दशमलव वर्गीकरण, सार्वभौमिक दशमलव वर्गीकरण विधि का प्रयोग नहीं किया जाता है, किन्तु अन्य विधि का प्रयोग किया जाता है।

उपसंहार –

पुस्तकालयों का प्रथम और सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य कार्य है पाठ्य सामग्रियों को प्राप्त करना पाठ्य सामग्री के अभाव में किसी भी पुस्तकालय का अस्तित्व संभव नहीं है। यह ही नहीं पाठ्य सामग्रियों का संरक्षण एवं समुचित व्यवस्थापन करना भी पुस्तकालयों का दायित्व है पुस्तकालयों में जो भी प्रलेख किये जाते हैं उनका सूरूचि पूर्ण होना ज्ञान वर्धक होना तथा सूचना प्रदायक होना आव यक है इसलिए उनकी आपूर्ति के समय इन सभी बातों पर ध्यान देना आवश्यक है तभी पुस्तकालय अपने महत्वपूर्ण सामाजिक दायित्वों को पूरा किया जा सके।

बिलासपुर जिले के तीनों वि ववि्यालयों के संग्रह का मुख्य भाग पुस्तकें तथा जर्नल्स है अधिकांश पुस्तकालय के पास सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग में भी अमुद्रित पाठ्य सामग्री का व्यापक अभाव है और इसका मुख्य कारण बजट में कमी, पुस्तकालय में इन सामग्रियों के प्रति जागरूकता का अभाव तथा पाठकों में इन सामग्रियों के प्रति रूची का अभाव जबकि राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थानों में वर्तमान समय में अमुद्रित पाठ्य सामग्रियों (E-books, E-Journals, Date bases etc.) पर विशेष बल दिया जा रहा है तथा पाठकों में भी इन सामग्रियों के उपयोग के प्रति अति उत्साह है। पाठक मुद्रित सामग्री के अलावा अमुद्रित

Scanned by CamScanner

सामग्री का ज्यादा उपयोग करते हैं। छत्तीसगढ़ अभियांत्रिकी संस्थानों के पुस्तकालयों में पाठकों के पुस्तकालय आने का मुख्य कारण पुस्तकों का आदान–प्रदान, समाचार–पत्र पढ़ना, Nots बनाना, समान्य अध्ययन एवं पाठ्य सामग्रियों का फोटोकापी कराना होता है। बिलासपुर भाहर के वि वविद्यालयों में पाठक अपनी पाठ्य सामग्री की खोज सीधे संग्रह कक्ष में जाकर तथा पुस्तकालय कर्मचारियों के सहयोग से करते हैं। तथा कम्प्यूटर के माध्यम से भी पाठ्य सामग्री को ढुंढते है।

संदर्भ–सूची

- सूद, एस. पी. : पुस्तकालय सूचीकरण के सिद्धान्त
- त्रिपाठी, एस. एम.: आधुनिक सूचीकरण।
- शर्मा, एस. के. पाण्डेयः सरलीकृत पुस्तकालय सूचीकरण सिद्धान्त।
- कुमार, गिरजा एवं कुमार, कृश्ण : सूचीकरण के सिद्धान्त।
- कौला, पी. एन. और अग्रवाला, एस. एस.: सूची प्रविश्टि और प्रकिया।
- एंग्लो अमेरिकन कैटलॉगिंग रूल्सः द्वितीय संस्करण।
- रंगनाथान, एस. आर.: वर्गीकृत सूची संहिता।
- ठाकुर यू. एम. तथा शर्मा, बी. के.: पुस्तकालय, सूचना विज्ञान एवं सूचान।
- प्रौद्योगिकीः विवेचनात्मक अध्ययन
- शर्मा, बी. के. तथा ठाकुर, यू. एम. पुस्तकालय, सूचना विज्ञान एवं सूचना प्रौद्योगिकी विवेचनात्मक अध्ययन।
- त्रिपाठी, वी. एन. एवं दुबे, टी. एन.– पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञानः एक परिदृभय।
- शर्मा, एस. के. पाण्डेयः सरलीकृत पुस्तकालय सूचीकरण सिद्धान्त।
- रंगनाथान, एस. आर.: वर्गीकृत सूची संहिता।

Scanned by CamScanner

View publication stats